

(iii) वैकल्पिक द्वन्द्व:-

इस समास में विपरीतार्थक शब्दों का प्रयोग किया जाता है, इसलिये इसे वैकल्पिक द्वन्द्व समास कहते हैं और इस समास में दोनों पदों के बीच प्रयुक्त 'या' / 'मथवा' का लोप हो जाता है-

जैसे- सुख-दुःख- सुख या दुःख, जय-पराजय- जय या पराजय

सत्यासत्य- सत्य या असत्य,

लाभालाभ- लाभ या अलाभ

लाभ-हानि- लाभ या हानि,

यश-अयश- यश या अयश,

देखानेदेखा- देखा या अनेदेखा,

कर्तव्याकर्तव्य- कर्तव्य या अकर्तव्य

⑥ बहुव्रीहि समास - 'अन्य पद प्रधान'

इस समास का कोई भी पद प्रधान नहीं होता बल्कि अन्य पद की प्रधानता का बोध होता है, इसमें दोनों पद मिलकर मिलकर किसी अन्य के अर्थ में रह जाते हैं -

जैसे - गुडाकेश - गुडाका + ईश = नींद का है ईश्वर जो
 नींद ईश्वर अर्थात् अर्जुन/शिव

पहचान -

- (i) → इसका कोई भी पद प्रधान न होकर अन्य पद प्रधान होता है
- (ii) → इसके दोनों पद किसी संज्ञा के विशेषण होते हैं
- (iii) → इसमें दोनों पद मिलकर अन्य पद का भर्थ प्रकट करते हैं
- (iv) → इसके विग्रह के अंत में 'जो, जिसे, जिसका, जिसकी, जिसके, जिस-पर, इत्यादि प्रयुक्त होते हैं।

बहुव्रीहि समास के भेद :-

- ① → समानाधिकरण
- ② → व्यधिकरण
- ③ → सहायक

(i) समानाधिकरण बहुव्रीहि समासः—

जहाँ दोनों पद समान हों,
 अर्थात् दोनों पदों की विभक्ति समान हो, समानाधिकर बहुव्रीहि
 समास कहलाता है—

जैसे—प्राप्तोदक — प्राप्त है उदक (जल) जिसको

सम्बन्धप्रतिष्ठित - पाली है प्रतिष्ठा जिसेने,

कृतकार्य - कर लिया है कार्य जिसेने,

कुलहप्रिय - प्रिय है कुलह जिसेको

दत्तचित्त - दे दिया है चित्त जिसेने

(ii) व्यधिकरण बहुव्रीहि समास-

इस समास में दोनों पदों की विभक्ति असमान होती है, इसलिये इसे व्यधिकरण बहुव्रीहि समास कहते हैं -

जैसे - मकरध्वज - वह जिसके मकर का ध्वज है **अर्थात्**
 कामदेव

- कुसुमाकर - वह जिसके कुसुम केश हैं अर्थात् कामदेव
- हिमलया - हिम की लनया (पुत्री) है जो अर्थात् पार्वती
- दीर्घबाहु - दीर्घ (लम्बी) हैं बाहु (भुजाएँ) जिसकी अर्थात् विष्णु
- आजानुबाहु - बाहु (भुजाएँ) हैं घुरनों तक लम्बी जिसकी अर्थात् राम
- पन्नगारि - पन्नगों (साँपों) का शरि (दुश्मन) है जो अर्थात् गरुड

(iii) सहार्थक बहुव्रीहि समास—

इस समास में साथ के अर्थ का बोध होता है, इसलिये इसे, सहार्थक बहुव्रीहि समास कहते हैं—

जैसे— सपरिवार— परिवार के साथ है जो अर्थात् राम

सपत्नीक— पत्नी के साथ है जो अर्थात् राम

सानुज— अनुज के साथ है जो अर्थात् राम

सप्रेम - प्रेम के साथ है जो,

सकुशल - कुशलता के साथ है जो

सबल - बल के साथ है जो,

सविनय - विनय के साथ है जो.